विचार बिन्दु

उपकार के लिए अगर कुछ छल भी करना पड़े तो उससे आत्मा की हत्या नहीं होती। -प्रेमचंद

सफलता का मूलमंत्र युक्ति है

युक्ति एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। आचार्य चरक के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वत्तर्मान, भूत और भविष्य, तीनों कालों का अनुमान होता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25):**बुद्धिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया।** ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति की सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

आचार्य चरक द्वारा युक्ति की परिभाषा को बहुत लोगों ने बहुत प्रकार से विश्लेषण किया है। अनेक प्रकार के संयोगों से उत्पन्न हुये अविज्ञात भावों या विषयों को, विज्ञात विषयों के कार्य व कारण भावों के प्रकाश में जो बुद्धि देखती है या ज्ञान कराती है, उसे युक्ति कहा जाता। इस युक्ति के द्वारा त्रिकाल (वर्तमान, भूत, भविष्य) का ज्ञान होता है तथा त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) की सिद्धि होती है। एक अन्य रूप में देखें तो जो बुद्धि अनेक कारणों के संयोग से उत्पन्न अथवा ज्ञात जिन भावों को देखती है उस त्रिकाल-ज्ञानकारक बुद्धि को युक्ति कहते हैं। इसी के द्वारा अर्थ, धर्म व काम की उपलब्धि की जाती है।

अगर युक्ति को प्रमाण के रूप में देखा जाये तो यह वस्तुतः अनुमान प्रमाण में समाहित और अनुमान की सहायक मानी जाती है। यही कारण है कि आचार्य चरक द्वारा सूत्र स्थान में आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान और युक्ति को पृथक-पृथक प्रमाण मानने के बाद भी आगे विमान स्थान में अनुमान को परिभाषित करते समय स्पष्ट किया है कि अनुमान वह तर्क है जो युक्ति की अपेक्षा रखता है(च.वि.4.6): **अनुमानं खलु तर्क युक्त्यपेक्षः।।** यही कारण है कि विमान स्थान में मूलतः तीन ही प्रमाण-आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान-वर्णित किये गये हैं। अनुमान में ही युक्ति का अर्न्तभाव मान लिया जाता है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। बहुत से विज्ञात या जाने-पहचाने अर्थों में कारण और प्रभाव को देखकर अविज्ञात या अपरिचित या अज्ञात अर्थों में कारण और प्रभाव को ज्ञात करना, समझना या प्रयोग करना युक्ति है। उदाहरण के लिये यदि आप यह पहले से जानते हैं कि जोते हुये खेत में अनुकूल ऋतु में बीज बोने और समय-समय पर खाद-पानी देने से अनाज का अच्छा उत्पादन होता है, तो आपके लिये यह विज्ञात अर्थ है। इस विज्ञात अर्थ से यह भी समझा जा सकता है कि वन-भूमि में वर्षा-जल एवं मृदा संरक्षण कर बीजारोपण या पौधारोपण करने तथा पौधों की सिंचाई और देखभाल करने पर वृक्ष तैयार होंगे। ऐसा समझना युक्ति है।

एक अन्य उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। आयुर्वेद के सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त (यहाँ पर विज्ञात अर्थ) के अनुसार यदि युक्ति लगाकर देखें तो एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।

आयुर्वेद में युक्ति का प्रमाण-आधारित चिकित्सा में भारी महत्त्व है। चरकसंहिता में स्पष्ट किया गया है कि मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29): **भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते।** युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्ति-व्यपाश्रय या प्रमाण-आधारित चिकित्सा आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। विस्तृत संहिताओं के बाद भी आयुर्वेदाचार्यों पर इतना बड़ा विश्वास करने का कारण सिर्फ यह है कि चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): **सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता।** जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो केवल शास्त्रों और संहिताओं के निर्देश मात्र नहीं बल्कि आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

प्रबंधकों के अपने पूर्व के अनुभवों की समग्रता के आधार पर जब उनकी बुद्धि वर्तमान परिस्थितियों और समस्याओं को समझती है या देखती है और उनका हल सुझाती है तो उसे युक्ति कहा जाता है। असल में प्राचीन काल से लेकर आज तक युक्ति के बिना मानव का काम नहीं चल सका। सफलता युक्ति पर आश्रित है।

युक्ति-व्यपाश्रय का आयुर्वेद में महर्षि चरक द्वारा किया गया उपयोग आयुर्वेद को पूर्णतः प्रमाण-आधारित चिकित्सा पद्धति बना देता है। उदाहरण के लिये (च.सू., 11.54): **युक्तिव्यपाश्रयं-पुनराहारौषधद्रव्याणांयोजना**, अर्थात आहार तथा औषधि द्रव्यों की योजना को युक्ति-व्यपाश्रय कहा जाता है। यह योजना उन्ही तर्कं और विधियों पर निर्भर होती है जिनकी चर्चा ऊपर की गयी है। यह पूर्ण रूप से कारण और प्रभाव (कॉज एंड इफ़ेक्ट) के अद्भुत सैद्धांतिक पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है (च.सू. 11.32): **कर्तृकरणसंयोगात् क्रिया कृतस्य कर्मणः फलं नाकृतस्य नाङ्कुरोत्पत्तिरबीजात् कर्मसदृशं फलं नान्यस्माद्बीजादन्यस्योत्पत्तिः इति युक्तिः।** तात्पर्य यह है कर्ता व साधन के जोड़ से क्रिया होती है, किये गये कार्य का फल मिलता है न कि नहीं किये गये कार्य का, बीज के बिना अंकुर नहीं उत्पन्न होता, जैसा काम वैसा फल, एक जाति के बीज से अन्य की उत्पत्ति नहीं होती, यही युक्ति है। आयुर्वेदिक औषधियों के संबंध में भी युक्ति की बड़ी भूमिका है (च.सू.2.16): **मात्राकालाश्रया युक्तिः सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। तिष्ठत्युपरि युक्तिज्ञो द्रव्यज्ञानवतां सदा।।** औषधीय द्रव्यों की युक्ति (योजना, योग-निर्माण, योगीकरण या फार्म्युलेशन) मात्रा और काल पर निर्भर है, सफलता युक्ति पर निर्भर है, इसीलिये युक्तिज्ञ सदैव द्रव्य-ज्ञानियों से ऊपर है।

ध्यान से देखा जाये तो युक्ति एक सार्वभौमिक सिद्धान्त है, जिसमें यह संदेश निहित है कि युक्ति से धन, सम्पदा, धर्म तथा आनन्द सब प्राप्त किया जा सकता है। आधुनिक प्रबन्ध-विज्ञान की दृष्टि से देखें तो किसी भी कार्य में सफलता युक्ति पर आश्रित है। युक्ति के बिना सामजिक, आर्थिक या पारस्थितिकीय तंत्रों को नहीं साधा जा सकता।

आधुनिक प्रबन्ध-विज्ञान में युक्ति उपलब्ध ज्ञान, शोध एवं अनुभवजन्य ज्ञान के प्रकाश में किसी नवीन कार्य के सम्पादन के लिये जो साधन या विधि प्रयोग में लायी जाती है, वह युक्ति है। प्रबंधकों के अपने पूर्व के अनुभवों की समग्रता के आधार पर जब उनकी बुद्धि वर्तमान परिस्थितियों और समस्याओं को समझती है या देखती है और उनका हल सुझाती है तो उसे युक्ति कहा जाता है। असल में प्राचीन काल से लेकर आज तक युक्ति के बिना मानव का काम नहीं चल सका। सफलता युक्ति पर आश्रित है (च.सू.2.16): **सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता।** यही कारण है कि आयुर्वेद के अलावा भी अनेक ग्रंथों में युक्ति के महत्वपूर्ण वर्णन उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये बुद्धचरित में अश्वघोष का कथन है कि समुचित युक्ति से करने पर सब कुछ किया जा सकता है (बुद्धचरित, 13.60): न्यायेन युक्तं च कृतं च सर्वम्। दरअसल युक्ति पर पूरा युक्तिशास्त्र है जिसे उपयुक्तता और औचित्य का विज्ञान भी कहा जाता है।

युक्ति को जुगाड़ समझाने की भूल नहीं करना चाहिये। युक्ति और जुगाड़ में कई अंतर हैं, पर मुख्य फ़र्क तर्क और तुक्का का है। युक्ति स्वयंप्रमाण होते हुये प्रमाण-आधारित चिकित्सा का मूल आधार है। जुगाड़ ट्रायल-एंड-एररहैः काम कर भी जाये तो भी घुणाक्षर न्याय ही कहलायेगा। घुनों के चलने से लकड़ी में अक्षरों जैसे आकार बन जाते हैं, हालाँकि घुन लिखने के उद्देश्य से नहीं काटते कि अक्षर बनें। इसी प्रकार जहाँ एक काम करने में कोई दूसरी बात अनायस हो जाय वहाँ घुणाक्षर न्याय हो जाता है। इस न्याय या उक्ति का प्रयोग ऐसे स्थलों पर करते हैं जहाँ किसी के द्वारा ऐसा आकस्मिक कार्य हो जाता है जो स्पष्ट, उद्देश्य, ज्ञान, तर्क, या युक्ति का प्रयोग किये बिना ही अनायास हो गया हो। कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक विधि दोषपूर्ण या तर्कविहीन होती है, तब तक परिणाम केवल संयोग ही कहलाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं:- थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति को मॉडलिंग के समकक्ष मन जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है। आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों और संहिताओं का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि औषधियों व चिकित्सा को प्रमाण-आधारित बनाने के लिये चार प्रमुख विधियाँ प्रयुक्त होती रही हैं। इनमें प्रत्यक्ष प्रमाण या डायरेक्ट ऑब्जर्वेशन, अनुमानया इनफरेंशियल एवीडेन्स, आप्तोपदेश या विद्वानों द्वारा पूर्व में दी गयी जानकारी, और अंततः युक्ति प्रमाण या रेशनल एक्सपेरिमेंटल एवीडेन्स हैं। प्रमाण-आधारित आयुर्वेद न केवल इन चार महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर टिका है, बल्कि उक्त चारों विधियाँ शोध-आधारित प्रमाण, स्थानीय-ज्ञान पर आधारित प्रमाण, अनुभवजन्य-ज्ञान पर आधारित प्रमाण, आयुर्वेद की संहिताओं पर आधारित प्रमाण, सामाजिक स्वीकार्यता पर आधारित प्रमाण तथा आधुनिक शोध में प्रचलित थ्योरी, ऑब्जर्वेशन, एक्सपेरिमेंट एवं मॉडलिंग से बहुत भिन्न नहीं हैं।

इस चर्चा का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? सबसे पहली बात तो यह है कि युक्ति वस्तुतः ज्ञात यथार्थ के माध्यम से अज्ञात यथार्थ को जानने का विज्ञान है। इसलिये युक्तिपूर्वक कार्य करने से जीवन में कुछ प्राप्त करने के लिये युक्ति का प्रयोग ही श्रेयस्कर है। दूसरी बात यह है कि आप उन आयुर्वेदाचार्यों को उत्तम मानकर उनसे चिकित्सा ले सकते हैं जो पूर्णतः युक्ति-व्यपाश्रयीया प्रमाण-आधारित चिकित्सा करते हैं। और तीसरी बात यह है कि युक्ति कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है जिसके माध्यम से आप स्वयं के लिये उन सात दीवारों-आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन, औषधि-को सम्हाल सकते हैं जो हमारे जीवन और मृत्यु के बीच या स्वास्थ्य और रुग्णता के बीच अस्तित्व में हैं। जहाँ तक प्रतिदिन के जीवन का प्रश्न है उसमें सभी प्रकार के कार्यों के संपादन में सफलता प्राप्त करने का मूलमंत्र युक्तिपूर्वक लगे रहना है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

संरक्षण से ही रुकेगा भारतीय प्रतिभा पलायन

अविनाश जोशी

भारत की शिक्षा प्रणाली को विश्व में काफी इज्जत की दृष्टि से देखा जाता है जो बेहद प्रतिभाशाली और बुद्धिमान युवा पैदा करती है। भारतीय प्रतिभा की मांग दुनिया के कोने-कोने में हैं। भारतीयों को बाहरी देशों में अच्छे स्तर के जीवन के साथ अच्छे पैकेज भी प्राप्त हो जाते हैं बस उच्च जीवन स्तर एवम उन्नत व्यापारिक परिस्थितियों के मोह वश वे अपने देश को छोड़ देते हैं। वर्तमान समय में भारतीय अलग-अलग क्षेत्रों में उत्कृष्टता और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में उच्च वेतन वाली नौकरियों को हासिल करके देश का नाम रोशन कर रहे हैं। वे व्यापार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट होने के लिए जाने जाते हैं और नवीनतम शोध अनुसार संयुक्त राज्य के प्रौद्योगिकी उद्योग का एक बड़ा हिस्सा भारतीय समुदाय द्वारा संचालित होता है।

अर्थशास्त्रियों के नवीनतम आकलन के अनुसार भारतीयों ने अमरीकी प्रौद्योगिकी के निर्माण के लिए प्रमुख रूप से योगदान दिया है और अर्थव्यवस्था को भी बदल कर रख दिया है। यदि उन्होंने भारत के विकास में इसका आधा भी योगदान दिया होता तो देश की वर्तमान अर्थव्यवस्था एक अलग रूप में विकसित देशों के साथ खड़ी नजर आती। किंतु सवाल यह उठता है कि भारत में प्रतिभा पलायन की समस्या इतनी गंभीर क्यों है। हमें उन कारणों को समझना होगा और इस समस्या को सुलझाने के लिए कुछ मजबूत व गंभीर कदम उठाने होंगे। मगर पिछले कुछ वर्षों में ऐसे भी अनेक लोगों ने यहां की नागरिकता त्याग दी, जिनके यहां अपने कारोबार थे और उन्हें समेट कर वे दूसरे किसी देश में चले गए। यानी उन्हें यहां कारोबार की स्थितियां अनुकूल नहीं लगीं। इसके अलावा कई लोग असुरक्षाबोध के चलते भी कहीं और जा बसे।

जब व्यक्तिगत सुविधाओं, रोजगार और उन्नत जीवन जीने की लालसा में भारत के लोग नागरिकता छोड़ कर दूसरे देशों में जाकर बसने लगें, तो यह निश्चित रूप से भारत के लिए सोचने का विषय होना चाहिए। प्रतिभा पलायन एक ज्वलंत विषय है एवम इसको लेकर लंबे समय से भारत में चिंता जताई जाती रही है। भारत में उच्च शिक्षित लोगों के लिए अवसर तैयार करने के लिए यह आवश्यक होगा कि शोध संस्थानों और उच्च तकनीक वाले संस्थानों को यहां लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। भारत में कुछ समय से युवाओं को भावनात्मक रूप से प्रेरित करने का प्रयास किया जाता रहा है कि जिस देश ने उनकी पढ़ाई-लिखाई पर इतना खर्च किया है, जब सेवा देने का समय आए तो उस देश को छोड़ कर अपनी प्रतिभा का योगदान किसी और देश में देना नैतिक रूप से सही नहीं होगा। मगर इस प्रेरणा का कोई असर नहीं हुआ एवम आनुपातिक रूप से प्रतिभा पलायन बढ़ता गया। अब स्थिति यह है कि जिनके भारत में उन्नत कारोबार हैं, उनमें भी अपनी नागरिकता त्याग कर दूसरे देशों में जाकर वहा की नागरिकता लेने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है।

सोशल मीडिया पर एक संदेश देखा जा रहा है जो कुछ इस तरह से है : जब पढ़ेगा भारत, तब ही बढ़ेगा अमरीका। यह एक प्रकार से सच या हकीकत को पूरी सत्यता के साथ बयान करना है जिसकी टीस प्रत्येक नागरिक के मन में उठना स्वाभाविक है। यह सोच गलत नहीं है कि अगर भारत से प्रतिभा का पलायन न होता या न होने दिया जाता तो आज हम विकसित देश कहलाते?

निश्चित रूप से यह कोई आसान काम नहीं है क्योंकि आज़ादी के बाद कोई भी सरकार प्रतिभा पलायन को रोकने में सफल नहीं रही है। लेकिन आंकड़ों से पता चलता है कि अगर कोई सरकार प्रतिभा पलायन को रोकने के लिए बड़ा अभियान शुरू करती है तो यह भारत के लिए एक बेहद फायदेमंद कदम साबित हो सकता है।आमतौर पर दूसरे देशों में जाकर बसने का प्रमुख कारण रोजगार होता है। भारत में हर साल लाखों युवा इंजीनियरिंग, चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा हासिल करके रोजगार की तलाश में निकलते हैं, मगर उनमें से चालीस फीसदी को भी उनकी इच्छा और क्षमता के अनुरूप रोजगार नहीं मिल पाता। ऐसे में वे दूसरे देशों का रुख करते हैं।

कोई भी व्यक्ति विदेश तब जाता है जब उसके सामने अवसरों की कमी हो जिनके बल पर वह अपनी प्रतिभा के अनुसार वेतन और अन्य सुविधाएं हासिल कर सके। इसका मतलब यह है कि वह तुलना करता है कि देश में उसे यह सब कुछ मिल सकता है या नहीं, अगर नहीं तो वह किसी भी तरीके से वहां जाएगा जहां उसे यह सब आसानी से मिल जाएगा। इस श्रेणी में अधिकतर वे युवा आते हैं जो इतने काबिल हैं कि कोई भी संस्थान उन्हें अपने साथ जोड़ने और साथ ही जोड़े रखने के लिए उनकी सोच से भी अधिक वेतन और भत्ते देने की पेशकश करता है। जब उसके सामने किसी एक को चुनने का अवसर आता है तो वह बेहिचक मल्टीनैशनल कंपनियों को चुनकर अपनी मातृभूमि को अलविदा कहने में कतई संकोच नहीं करता। सवाल यह है कि अपने देश को छोड़कर विदेश में बसने के क्या कारण हैं? मुख्यत उच्च शिक्षित वर्ग के लोगों के लिए देश में तुलनात्मक रूप से अवसर की कमी है। चाहे कारोबार हो, शोध या पेशेवर मौके हों, विदेश में कहीं अधिक विकल्प हैं। यदि यह वर्ग यहीं रहने लगते हैं और काम करते हैं तब वे जीडीपी में इससे कई गुना अधिक का योगदान दे सकते हैं। हर साल विदेश जाने की चाह रखने वाले ऐसे युवा भी हैं लेकिन अगर प्रतिभा का पलायन इसी तरह जारी रहा तब कौशल विकास और कमाई करने की क्षमता खत्म हो जाएगी। इसके अलावा बहुत सारे युवा इसलिए भी दूसरे देशों का रुख करते हैं कि यहां उन्हें उनकी प्रतिभा के अनुरूप पैसा नहीं मिल पाता। कई विकसित देशों की तुलना में यहां वेतन, भत्ते और काम करने की परिस्थितियां अनुकूल नहीं हैं। इसलिए उन्हें जैसे ही मोका मिलता है वे दूसरे देशों में चले जाते और फिर धीरे धीरे यहां की नागरिकता छोड़ देते हैं। बहुत सारे युवा विदेशों में पढ़ने जाते हैं और फिर वहीं की नागरिकता हासिल कर लेते हैं। भारतीय प्रतिभाए आरक्षण प्रणाली से पीड़ित हैं। आरक्षित वर्ग के कई अयोग्य लोगों को उच्च वेतन वाली नौकरियां मिलती हैं जबकि योग्य उम्मीदवारों को कम वेतन वाली नौकरी से संतुष्ट होना पड़ता है। योग्य व्यक्तियों के लिए यह व्यवस्था अत्यंत तकलीफदेह है ऐसे में स्वाभाविक तौर पे प्रतिभाशाली युवा वर्ग अन्य देशों में अपनी प्रतिभा के समान नौकरी तलाशने के लिए वहां पे स्थानांतरित हो जाते हैं। सही समय है कि भारत सरकार को इस पक्षपाती आरक्षण प्रणाली को खत्म कर देना चाहिए। योग्यता एकमात्र फैसले का आधार होना चाहिए। आरक्षण के अलावा यह पे लोगों को उनके पंथ, जाति और अन्य चीजों के आधार पर भी प्राथमिकता दी जाती है जिनका नौकरी से कुछ लेना-देना नहीं है। बहुत से लोग अपने समुदाय या शहर से संबंधित लोगों को नौकरी देते हैं। यह सब बंद कर दिया जाना चाहिए और एक व्यक्ति को उसकी योग्यता और क्षमता के आधार पर नौकरी मिलनी चाहिए।

भारत में प्रतिभा पलायन की शुरुआत वर्ष 1960 के दशक के बाद से शुरू हुई जब ब्रिटेन और उत्तरी अमेरिका ने उनके देश में आने के नियमों में थोड़ी ढील दी जिसके बाद उच्च शिक्षित पेशेवरों ने वहां जाना शुरू कर दिया। अब तो हालात यह है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के स्नातकों के हर बैच में से आधे से अधिक छात्र विदेश चले जाते हैं। इसके अलावा 1960 के दशक के बाद से आदित्य बिड़ला समूह और लक्ष्मी मित्तल समूह ने भी विदेशों में बड़े कारोबार स्थापित कर लिए। ऐसा कहा जाता है कि प्रवासन की गति पिछले दशक में तेज हुई है।

भारत जैसे विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के तरीकों का उद्देश्य प्रतिभा पलायन की समस्या को नियंत्रित करना है। लोगों को इस समस्या को नियंत्रित करने के तरीकों को गंभीरता से लेना चाहिए तथा सरकार और संगठनों द्वारा कार्यान्वित किया जाना चाहिए। युवाओं का विदेशों में पलायन रोकने के लिए देश प्रेम की भावना जागृत करनी चाहिए। उन्हें सम्मानजनक वेतन और तरक्की मिलनी चाहिए। देश में भ्रष्टाचार और भाई भतीजावाद को समाप्त करना चाहिए क्योंकि इससे प्रतिभाशाली युवाओं के साथ भेदभाव होता है। युवाओं को देश में बढ़ने का अवसर और अच्छा जीवन स्तर देकर उनका विदेशों की तरफ पलायन को रोका जा सकता है।

-अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

कृषि उत्पादन के साथ-साथ व्यापार से भी जुड़ें किसान : उपराष्ट्रपति धनखड़

- **उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ जोधपुर पहुंचे, काजरी में किसानों एवं वैज्ञानिकों से किया संवाद**
- **काजरी ने मरूस्थल में टिब्बा स्थिरीकरण किया तथा क्षेत्र को हराभरा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है : गजेन्द्र सिंह शेखावत**

जोधपुर, (कासं)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ शनिवार को जोधपुर पहुंचे। हवाई अड्डे पर केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत सहित प्रशासनिक अधिकारियों ने उनकी अगवानी की। वे निश्चित कार्यक्रम के अनुसार काजरी पहुंचे तथा वहां आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

उन्होंने काजरी में किसानों एवं वैज्ञानिकों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि किसान बदलाव का केन्द्र होता है। देश की अर्थव्यवस्था में किसान का बहुत योगदान है। मैं किसान पुत्र हूं और किसानों की समस्याओं के समाधान कृषि के विकास के प्रति सदैव सर्मपित रहूंगा। कृषि उपज उत्पाद सबसे बड़ा मार्केट है। उन्होंने आव्हान किया कि कृषक अपने बच्चों परिवारजनों को कृषि व्यापार में लगायें। उन्होंने कहा कि विश्वभर में जैविक उत्पाद की मांग है। किसान उत्पादन के साथ साथ व्यापार से जुड़े इससे आर्थिक लाभ होगा। नई तकनिकियों को अपनाये। कृषि उपज के साथ साथ उसमें मूल्य संवर्द्धन का काम करें, इससे लाभ कई गुना बढ़ जायेगा।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत सरकार की कृषि योजनाऐं बहुत सकारात्मक है। कृषि व्यापार उत्पाद का निर्यात तथा मूल्य संवर्द्धन में रोजगार के बहुत अवसर है। शुष्क क्षेत्रों में कृषि चुनौतिपूर्ण रही है। मगर आईसीएआर के विभिन्न संस्थानों एवं काजरी ने शुष्क क्षेत्र में खजूर अनार जीरा एवं नवीन किस्मों की प्रौद्योगिकियों से क्षेत्र एवं किसानों को लाभ मिल रहा है। किसानों की भलाई कृषि के विकास के लिए काजरी अच्छा काम कर रही है।

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने इस अवसर पर अपने वर्चुअल उद्बोधन में कहा कि जीवन का आधार जल एवं कृषि है। भारत में दालों कपास गन्ना चीनी दूध एवं फल सब्जियों का भरपुर उत्पादन होता है। किसानों की आय बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महत्वपूर्ण योजनाऐं आरम्भ की है। फसल बीमा एफपीओ किसान क्रेडिट कार्ड आदि योजनाओं से किसान लाभ ले रहे हैं। काजरी ने वैज्ञानिकों ने रेतीले इलाकों में कृषि के विकास में बहुत अच्छा काम किया है। जिसका प्रतिफल किसानों को मिल रहा है। नवीनतम तकनीकियों से खेती में लागत कम एवं उत्पादन अधिक एवं गुणवत्तापूर्ण हो रहा है।

केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने अपने संबोधन में कहा कि काजरी ने मरूस्थल में टिब्बा स्थिरीकरण किया तथा क्षेत्र को हराभरा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसानों की मेहनत एवं तकनीकियों से देश आत्म निर्भर बना। किसानों का लाभ बढाने की आवश्यकता है, इसके लिए भारत सरकार ने अनेक योजनाऐं आरम्भ की एवं महत्वपूर्ण कदम उठायें। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री कृषि को आगे बढाने का विजन लेकर चल रहे हैं। जिससे कृषि एवं किसान की प्रगति हो रही है। कृषि क्षेत्र में ड्रोन के उपयोग से कृषि में बड़ा बदलावा आयेगा। भारत सरकार की कृषि योजनाओं के माध्यम से किसानों को आत्म निर्भर बनाया जा रहा है। काजरी के प्रयासों से रेगिस्तानी इलाका हराभरा हुआ तथा यहां अनार खजूर जीरा की बम्पर पैदावार हो रही है। बाजरा की केवल हम रोटी खाते थे अब बिस्कट, चॉकलेट, कुरकरे, मठड़ी आदि खाने को मिल रही है।

काजरी निदेशक डॉ. ओपी यादव ने उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड को बाजरा के सिट्टे का गुलदस्ता एवं मिलेट्स उत्पाद देकर स्वागत किया। केन्द्रिय कृषि राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने डॉ. (श्रीमती) सुदेश धनखड़ का स्वागत किया। काजरी निदेशक डॉ. ओपी यादव ने संस्थान की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

इस मौके पर सूरसरगार विधायक सूर्यकान्त व्यास एवं राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत उपस्थित थे। कृषि किसान संवाद कार्यक्रम में लगभग 3000 किसानों महिलाओं उद्यिमयों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन गजेसिंह जोधा ने किया।

"उत्कर्ष" की कार्यशाला में अभ्यर्थियों ने विशेषज्ञों से जानी सफलता की रणनीति

- **कार्यशाला में आरएएस मुख्य परीक्षा के अभ्यर्थियों ने श्रेष्ठ रणनीतियों के बारे में जानकारी ली**

जोधपुर, (कासं)। उत्कर्ष क्लासेस द्वारा शनिवार को आयोजित विशेष कार्यशाला में आरएएस मुख्य परीक्षा के अभ्यर्थियों ने उत्साह से भाग लिया और विशेषज्ञों से परीक्षा में बेहतर अंक प्राप्त करने के लिए अपनाई जाने वाली जरूरी व श्रेष्ठ रणनीतियों के बारे में जानकारी हासिल की।

शास्त्री नगर स्थित उत्कर्ष कॉम्प्लेक्स में आयोजित इस कार्यशाला में मुख्य मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित आईएएस व आरएएस जैसी सिविल परीक्षाओं के विख्यात व अनुभवी विशेषज्ञ डॉ. दौलत खान की अगुवाई में विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियों को संबंधित परीक्षा के विभिन्न पहलुओं से अवगत किया गया। कार्यशाला में अभ्यर्थियों को परीक्षा में प्रभावी उत्तर हेतु लेखन कौशल के महत्त्व व उसे निखारने के तरीकों से अवगत किया गया। इसके अलावा रिवीजन कैसे किया जाए, समय का प्रबंधन करते हुए कम समय में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का अध्ययन कैसे हो? इत्यादि जिज्ञासापूर्ण सवालों के विश्वसनीय जवाब दिए गए। ध्यातव्य है कि आरएएस मुख्य परीक्षा हेतु जयपुर में इस विशेष कार्यशाला का आयोजन रविवार, 8 अक्टूबर को किया जाएगा।

9 अक्टूबर से आरएएस मैंस के ऑफलाइन बैच होंगे शुरू : उत्कर्ष क्लासेस के सरदारपुरा स्थित व्यास भवन सेंटर पर आगामी आरएएस मुख्य परीक्षा- 2023 की तैयारी के लिए ऑफलाइन बैच 9 अक्टूबर से प्रारंभ किया जा रहा है। इस बैच में सिविल परीक्षाओं के बेहद अनुभवी विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को मुख्य परीक्षा की एक्सपर्ट तैयारी करवाई जाएगी। बैच में विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन करवाने के अलावा लेखन कौशल में सुधार के लिए विशेष अभ्यास सत्र, करेंट अफेयर्स की मासिक पत्रिका इत्यादि की सुविधायें उपलब्ध होगी। इसके अतिरिक्त आरएएस मैंस की टेस्ट सीरीज 15 अक्टूबर से प्रारम्भ की जाएगी।

राशिफल रविवार 8 अक्टूबर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2080, पुष्य नक्षत्र रात्रि 2:45 तक, सिद्ध योग सोमवार प्रातः 6:50 तक, गर करण दिन 10:13 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और रविपुष्य योग सूर्योदय से रात्रि 2:45 तक है। ज्वालामुखी योग रात्रि 2:45 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 11:25 से सोमवार दिन 12:37 तक रहेगी। आज दशमी का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:53 से 9:20 तक, लाभ-अमृत 9:10 से 12:14 तक, शुभ 1:42 से 3:09 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:03

मेष

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

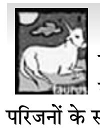

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। घर-परिवार में रचनातमक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

सिंह

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

वृश्चिक

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी, मनोबल ऊंचा रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मकर

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय दूर होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मीन

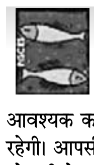

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।